Date: / /

CT1120यम - 1

स्नातक प्रथम खण्ड

अतीत (कथा संग्रह)

उमानाथ झा एवं हुनक अन्यान्य कृतिक सामान्य परिचय

साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिली भाषा साहित्यक सर्वाधिक सशक्त विधा कथा साहित्य पर सर्वप्रथम उमानाथ झाक 'अतीत' कथा संग्रह कें 1987 मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार सँ पुरस्कृत कएल गेल। ई निर्विवाद अछि जे मैथिली कथा साहित्यक विकास मे उमानाथ झाक कथा महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। उमानाथ झाक जन्म 01 जनवरी 1923 ई० कें मधुबनी जिलाक महरैल गाम मे भेलनि। हिनक परिवार मिथिलाक प्रख्यात पण्डितवर्ग सँ सम्बद्ध रखैत छल। उमानाथ झा अंग्रेजी साहित्य मे उच्च शिक्षा प्राप्त कएने छलाह। ई मुजफ्फरपुर, पटना, गया, आ दरभंगाक विभिन्न महाविद्यालय मे शिक्षण कार्य कयलनि। अन्तमे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक प्रतिकुलपतिक पद सँ सेवा निवृत्त भेलाह। ई 1968-72 एवं 1973-77 धरि मैथिलीक साहित्य अकादेमी परामर्श मंडलक सदस्य छलाह। एकर अतिरिक्त किछु दिन मैथिली अकादमी, पटनाक सदस्य सेहो रहलाह। इंडियन एशोसिएशन ऑफ इंगलीश स्टडीजक सदस्यक रूपमे हिनक कार्य अविस्मरणीय रहत। मैथिली साहित्य मे कुशल कथाकार, आलोचक, सम्पादकक रूपमे हिनक साहित्यिक गतिविधिक चर्चा विलक्षण प्रभाव छोड़ैत अछि।

हिनक उमानाथ झा मैथिली साहित्य मे उच्च कोटिक कथाकारक रूपमे प्रसिद्ध भेलाह। ई कथा लेखनक क्षेत्र मे बीसम शताब्दीक पाँचम दशक मे प्रवेश कयलनि। हिनक कथा पर पाश्चात्य साहित्यक प्रभाव स्पष्ट रूपें देखल जा सकैत अछि। तत्कालीन परिवेशक

Scanned with CamScanner

अनुकूल हिनक रचनाधर्मिता मे उत्तरोत्तर विकास भेल। एहि प्रसंग प्रो० अमरनाथ झा 'मैथिली' शोध पत्रिका अंक 7, पृ० 98 मे अपन विचार निम्न रूपें रखने छथि —

"प्रो० उमानाथ झा जाहि प्रकारक पारिवारिक ओ सामाजिक परिवेश मे जीवन व्यतीत करैत रहलाह अछि, ताहि सब पर आधारित भान हिनक कथा रचना सबमे भेटि रहल अछि। हिनक किछु कथा रचनाक विषयवस्तु परम्परागत ग्रामीण जीवनक पृष्ठभूमि पर तथा किछु कथा शहरी प्रवास मे रहनिहार ओ अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त मैथिल लोकनिक जीवन सँ सम्बन्धित अछि। हिनक दृष्टिकोण तथा अभिव्यक्ति कौशल पर पाश्चात्य साहित्यक भाव विचारक प्रभाव कोन रूपें पड़ल अछि ताहि प्रसंग आत्म-निरीक्षण करैत अपन प्रथम कथा संकलन 'रेखाचित्रक' भूमिका मे स्वयं लिखि गेल छथि जे ठकुआ, पिरुकुआ आदि पकवान खाइत रहनिहार कें केक, बिस्कुट ओ सैण्डविच आदि भने नव ओ अधिकतहार रुचिर पड़ौन्हि, किन्तु इहो सब ओही मैदा चीनी ओ घी सँ बनाओल जाइत अछि जाहि सँ ठकुआ, पिरुकिआ आदि बनल रहैत अछि। अर्थात हिनक कथावस्तु ओही सब विषयवस्तु सब पर आधारित रहैत अछि जे परम्परागत कथा सबमे रहैत अछि, केवल अभिव्यक्ति कौशल मे नवीनता अछि"।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय,
राजनगर, मधुबनी

Scanned with CamScanner